International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 9, 445-448
Sep 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 4.342

राजेन्द्र प्रसाद तिवारी
भूगोल विभाग, हे0 न0 ब0 ग0 वि0 वि0 श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

एम0 एस0 पंवार
भूगोल विभाग, हे0 न0 ब0 ग0 वि0 वि0 श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

एम0 के0 परमार
ग्रामीण प्रौद्यौगिकी विभाग, हे0 न0 ब0 ग0 वि0 वि0 श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

जनजातिय समुदायो की खाध्य एवं आर्थिक सुरक्षा, एक अध्ययन, जिला चमोली, उत्तराखण्ड

सारांश
भोटिया उत्तराखण्ड की जनजाति है, जिनकी अपनी विशिष्ट पहचान है। खान पान से लेकर रहन सहन व संस्कृति के आधार पर यह जनजाति उत्तराखण्ड में जगह जगह वितरित है। चमोली जिले में यह भोटिया एवं उत्तरकाशी में यह जाट नामों से जानी जाती है। भोटिया जनजाति की दो उप जातियां है मारछा और तोलछा। ये दोनो उपजातियां चमोली जिले के नीति और माणा घाटियों में निवास करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में भोटिया जनजाति अपनी खाध्य एवं आर्थिक सुरक्षा किस तरह एवं किन किन साधनों द्वारा उपलब्ध करते हैं, इसका विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया है।

कूट शब्दः जनजाति, व्यवसाय

प्रस्तावना
चमोली जिले में भोटिया जनजातियां निवास करती हैं जिसकी दो उप जातियां है मारछा और तोलछा। इस उप जाति के लोग अपने को तिब्बती मानते हैं तिब्बती लोगों से इनके व्यापारिक सम्बन्ध थे। उन्ही लोगों ने इन्हें मारछा नाम दिया तोलछा शब्द मारछाओं द्धारा उन भोटिया लोगो के लिये प्रयोग किया जाता है, जो मारछाओं की बस्तियों से प्रायः नीचे की घाटियों में निवास करते है। यह कहा जाता है की तोलछा का स्तर तथा सम्मान मारछाओं की तुलनाओं में कुछ कम हैं परन्तु तोलछा लोग इस बात को स्वीकार नहीं करते वे अपने आप को स्थानीय राजपूत कहते हैं। भोटिया जन जाति का जिस क्षेत्र में निवास है वहां की भौगोलिक स्थिति ने भोटिया लोगो के आर्थिक जीवन को प्रभवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया हैं। भोटिया जनजाति के अतीत का आर्थिक पक्ष जितना रोचक है वर्तमान में उस से कही अधिक चिन्ता जनक है। प्राचीन काल मे भोटिया लोगों के व्यापार की सर्वत्र चर्चा थी। ग्रीष्मकाल प्रारम्भ होते ही ये अपने व्यापार की तैयारियां प्रारम्भ कर देते थे। देश से एकत्रित की गयी सामग्री को यह लोग अपने पशुओं पर लाद कर पैदल मार्ग से तिब्बत और वहा से भी आगे मध्य एशिया तक चलते थे। अपने साथ लाये गये वस्तुओं का व्यापार करते थे। भोटिया लोगो में व्यापार कुशलता के साथ साथ साहस तथा व्यापार करने की सूझ बूझ भी पायी जाती है। इस कारण व्यापार के माध्यम से काफी धन अर्जित कर लेते थे । व्यापार करने के पश्चात जब वे लौटते थे तो अर्जित किये धन से वे उन स्थानों पर पाये जाने वाले दुर्लभ वस्तुओं को क्रय कर लेते थे। सन् 1950 में चीन द्धारा तिब्बत को अपने देश का भाग घोषित करने के फलस्वरूप भोटिया जाति का व्यापार अधिक प्रभावित हो गया। सन् 1962 में भारत और चीन के बीच युद्ध हुआ जिसके परिणाम स्वरूप भारत से व्यापार पूरी तरह बंद हो गया। वे पूरी तरह असहाय हो गये और उनकी आर्थिक स्थिति पूरी तरह डामाडोल हो गयी। नन्दादेवी जैव आरक्षित क्षेत्र के कोरजोन को पूरी तरह मानव व पशुओं के चुगाने पर प्रतिबन्ध लगने से यहा के लोगों की आजिविका पर संकट आ गया है।

भौगोलिक पृष्ठभूमि
चमोली जिला उत्तराखण्ड के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। चमोली जिला की उत्तरी सीमा 29^0 55′ से 31^0–03′45′′ और 79^0–02′39′′ से और 80^0–03′ 29′′ देशान्तरों के मध्य स्थित है। चमोली जिला उत्तराखण्ड का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा जिला है। तथा इसके उत्तरी सीमा पर तिब्बत है चमोली जिले को चारों ओर से उत्तरकाशी पिथोरागढ़ अल्मोड़ा और रूद्रप्रयाग व टिहरी से घिरा हुआ है। उत्तरकाशी उत्तर पश्चिम से पिथौरागढ़ दक्षिण पश्चिम अल्मोड़ा दक्षिण पूर्व से रूद्रप्रयाग दक्षिण पश्चिम से और टिहरी पश्चिम से चमोली जिले को घेरे रखा हैं 2011 के जनसंख्या से आँकड़ों के अनुसार चमोली जनपद की जनसंख्या 3,91,114 लाख है।

Correspondence
राजेन्द्र प्रसाद तिवारी
भूगोल विभाग, हे0 न0 ब0 ग0 वि0 वि0 श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

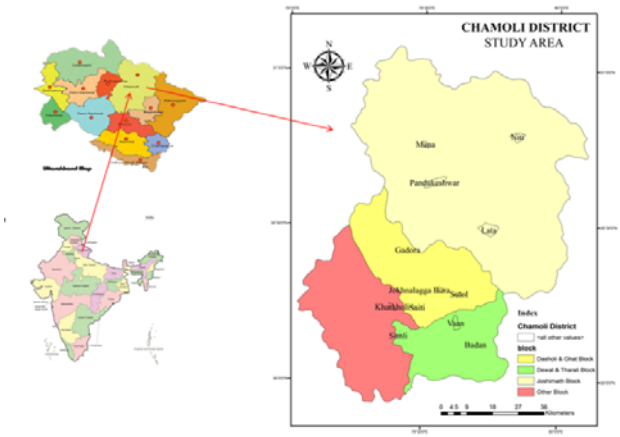

प्राथमिक आकडों का संकलन

नीति माणा घाटी से चार गांव प्रतिदर्श के रूप में लिये गये एक गांव की घाटी के शीर्ष से तथा दूसरे गाांव घाटी के मध्य भाग से लिया गया है। प्रत्येक गांव से दस उत्तर दाताओं का चुनाव देवनिर्देशन विधि के माध्यम से किया गया हैं तथा उनका साक्षात्कार लिया गया हैं । प्राथमिक आकडों का संग्रहण साक्षात्कार प्रश्नावली अवलोकन फोकस ग्रुप डिस्कर्शन के माध्यम से आंकडो का संग्रहण किया गया है।

उद्देश्य

समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के माध्यम से भोटिया जनजाति की खाद्यय व आर्थिक सुरक्षा का अध्ययन।
भोटिया जनजाति की वर्तमान आजिविका पद्धति का अध्ययन।

जनजातिय समुदायो की खाध्य एवं आर्थिक सुरक्षा

चमोली जनपद में भोटिया जनजाति निवास करती है भोटिया जाति दो उपजातियां होती है। तोलछा और मारछा अपनी परम्पराओं व संस्कृति की दृष्टि से ये जनजातियां समृद्ध होती है। प्रारम्भ से ही ये लोग व्यापार में संलग्न थे इनका व्यापार तिब्बत के साथ होता था। बकरियों और ऊन का व्यापार करते थे ऊन से अनेक प्रकार की वस्तुएं जैसे– दन, गलीचा, थुलमा आदि बनाये जाते है। भोटिया महिलाएं भी इनको दूर–दराज के गावों में बेचने चली जाती थी धीरे–धीरे इस व्यवसाय में कमी हो रही है। जब से नन्दादेवी जैव आरक्षित क्षेत्र के कौर जोन में पूर्णतः मानव तथा पशुओं के आवागमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। तब से यहां के लोगों को भेड़–बकरी के पालन में कमी करनी पड़ी जिससे लोगों की आजीविका पर संकट मंडरानें लगा तथा भोटिया लोगों ने आजीविका की अन्य स्रोतों पर भी ध्यान देना आरम्भ किया।

सारणी 1: ऊन के व्यवसाय में सलग्न लोग

गांव का नाम	सदस्यों की संख्या		कुल योग	प्रति परिवार आय	प्रतिशत
	हाँ	नही			
माणा	9	1	10	4000	90
लाथा	6	4	10	2000	60
नीति	9	1	10	2000	90
पाण्डुकेश्वर	7	3	10	2100	70

उपरोक्त सारणी स्पष्ट होता है कि माणा में सबसे ज्यादा ऊन का व्यवसाय 10 परिवार में 9 परिवार ऊन के व्यवसाय में संलग्न है। नीति में इतने ही लोग ऊन के व्यसाय में सलग्न है। पाण्डुकेश्वर में 10 मे से 7 परिवार ऊन के कार्य में संलग्न है। तथा लाथा में 6 परिवार ऊन के व्यसाय में संलग्न सबसे ज्यादा आय प्रतिपरिवार प्रतिवर्ष माणा की रू0 4000 तथा पाण्डुकेश्वर की रू0 2100 और लाथा एवं नीति की प्रति परिवार प्रतिवर्ष आय रू0 2000 है। ऊन की ब्रिकी से प्राप्त आय जब से नन्दादेवी जैव आरक्षित क्षेत्र का कोर जोन में मानव व पशुओं के आवाजाही पर प्रतिबन्ध लगा दिया है तब से यहा के लोगों के भेड पालन में कमी आई है ऊन का उत्पादन भी कम हुआ है।

कटुगी

कटुगी काले रंग की जड़ होती है जो दवाई के काम आती है कटुगी का पानी ठण्डा होता है । जिस व्यक्ति या जानवर के शरीर में अत्यधिक गर्मी हो जाती है उसे कटुगी का पानी पिलाते है। जिससे स्वास्थ्य सही हो जाता है। दूसरा बगड़ क्षेत्रों में जानवरों को गर्मी के कारण घमझर लग जाते है तो उन्हें अनेक खून से सम्बन्धित बीमारियां उत्पन्न हो जाती है। तो उन्हें सही करने के लिए कटुगी का पानी पिलाते है। अतः कटुगी अपनी औषधी गुण के लिए बहुत अधिक जानी जाती है तथा नीति माणा घाटी में यह अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न होती है। भोटिया लोग कटुगी को गांव–गांव बेच कर उससे आय प्राप्त करते है। वर्तमान में कटुगी के अधिक उपयोगिता के कारण बाजार में उसकी मांग तीव्रता से बढ़ गयी है। भोटिया लोग कटुगी बाजार में बेच कर आय प्राप्त कर रहे है और कोई भी दूसरे गांव का व्यक्ति या मेहमान उनके घर में आता है तो वे लोग उनके लिए कटुगी भी जरूर देते है। आज वर्तमान में भी यह जनजाति प्रकृति के अत्यधिक निकट है। माणा घाटी के लोग बद्रीनाथ यात्रा सीजन मे माणा गांव में बहुतायत में कटुगी बेच कर आय प्राप्त करते है।

सारणी 2: कटुगी व्यवसाय में संलग्न लोग

गांव का नाम	सदस्यों की संख्या		कुल योग	प्रति परिवार आय	प्रतिशत
	हाँ	नही			
माणा	8	2	10	2000	80
लाथा	6	4	10	500	60
नीति	6	4	10	600	60
पाण्डुकेश्वर	5	5	10	1200	50

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कटुगी का व्यवसाय सबसे ज्यादा माणा गांव में 10 परिवारों में से 08 परिवार कटुगी का व्यवसाय करते है। नीति व लाथा गांव में 10 में 06 परिवार परिवार कटुगी का व्यवसाय करते है तथा पाण्डुकेश्वर में 10 में 05 परिवार कटुगी का व्यवसाय करते है। प्रतिवर्ष प्रति परिवार आय रू0 सबसे ज्यादा माणा की रू0 2000 है तथा सबसे कम लाता की रू0 500 है।

फरण

फरण की खेती कर आय अर्जित करना भोटिया लोगों का पुस्तेनी व्यवसाय है। फरण एक सुगन्धित पौधा होता है जिसका प्रयोग दाल सब्जी को छौकने में किया जाता है। फरण के द्वारा दाल व सब्जी के स्वाद में कई गुना वृद्धि हो जाती है। प्राचीन काल से लोग फरण के व्यवसाय मे संलग्न है। फरण का व्यापार ये लोग निकटवर्ती क्षेत्रों में करते है तथा पहले से ही ये लोग फरण देकर उसके बदले में राजमा, धान, मण्डुआ, गेंहू सामग्री प्राप्त करते थे तथा गांव गांव में जाकर लोगों को फरण देना तथा उसके बदले में वे वस्तुएं प्राप्त करना जो उनके घर में या गांव में उत्पादित नही होती थी फरण एक तरह से प्याज व जीरा का प्रतिस्थापन है। तथा फरण का छौंका मारने पर दाल व सब्जी में प्याज व जीरा डालने की आवश्यकता नही होती है। नीति माणा घाटी में एक तो लोग फरण बुग्याल से लाते है तथा दूसरा अपने खेत में भी उगाते है। फरण के पौधा काटने पर उसे सूखाकर कूटा जाता है। फरण के फूल अत्यधिक सुगन्धित होते है तथा फरण माणा घाटी के लोग बद्रीनाथ में बेचते है, छोटे–छोटे प्लास्टिक के पैकेट बनाये होते है जिनका मूल्य 10 से 15 रू0 प्रति पैकेट होता है माणा गांव के लोग यात्रा सीजन में इन फरण के पैकेटो बहुत अधिक मात्रा मे बेचते है। तथा देश विदेश के लोग फरण को खरीदते है। फरण अनेक

गुणों से बहुत लाभदायक होता है यह औषधी काम भी करती है। पेट के लिए यह बहुत फायदेबन्द है। गैस सम्बन्धी बीमारी के लिए निजात दिलाता है। धीरे–धीरे बाजार में भी फरण की मांग तीव्रता से बढ़ने लगी है। यदि फरण की महत्ता उसके औषधीय गुणों की विशेषताओं का प्रचार व प्रसार करने की आवश्यकता है जिससे इसकी मांग में बहुत अधिक वृद्धि हो सकती है। इसका एक बड़ा बाजार उत्पन्न किया जा सकता है वैसे भी भोटिया लोग प्राचीन समय से अपने आस–पास के क्षेत्रों में जहां तक वे लोग जाते थे वहां इस फरण व्यवसाय को करते थे तथा गांव–गांव में जाकर फरण बेचते थे और फरण के बदले दूसरी वस्तुएं प्राप्त करते थे।

सारणी 3: फरण के व्यवसाय में सलग्न लोग

गांव का नाम	सदस्यों की संख्या		कुल योग	प्रति परिवार आय	प्रतिशत
	हाँ	नही			
माणा	8	2	10	1500	80
लाथा	7	3	10	1300	70
नीति	6	4	10	1000	60
पाण्डुकेश्वर	5	05	10	600	50

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि माणा में 10 में से 8 परिवार फरण के व्यवसाय मे सलग्न है जिनकी प्रतिवर्ष आय फरण से सबसे अधिक रू 1500 प्रति परिवार हो जाती है तथा सबसे कम प्रतिवर्ष आय फरण से पाण्डुकेश्वर गांव में रू 600 प्रति परिवार होती है

कीड़ाजड़ी

वर्तमान में भोटिया जनजाति के लोग कीड़ा जड़ी के व्यवसाय में भी संलग्न है। कीड़ा जड़ी का व्यवसाय अत्यधिक लाभप्रद है। इस कारण अधिक लोग इस व्यवसाय में संलग्न है। प्रत्येक गांव (नीति, माणा, लाथा, तथा पाण्डुकेश्वर) से प्रति परिवार 02 से 03 लोग बुग्याल में चले जाते है। तथा एक दो महिनें तक वहीं रहकर कीड़ाजड़ी का संग्रहण करते है। जब कीड़ाजड़ी एक या आधा किलो हो जाती है। तो लोग घर आ जाते है। एक किलों कीड़ाजड़ी की कीमत 4 से 5 लाख तक होती है कीड़ाजड़ी में बहुत अधिक औषधीय गुण होंने के कारण यह सोने के भाव बिकती है तथा विदेशी बाजार जापान व चीन में 1 किलो की कीमत 10 से 15 लाख है। इस व्यवसाय में महिलाओं से लेकर पुरूष बच्चे और गर्मियों में घर में छुटटी आये हुए लोग भी इस व्यवसाय में काफी रूचि ले रहे है। क्योंकि यह व्यवसाय कम समय मे अत्यधिक आयु वर्धक है।

सारणी 4: कीड़ा जड़ी व्यवसाय में संलग्न लोग

गांव का नाम	सदस्यों की संख्या		कुल योग	प्रति परिवार आय	प्रतिशत
	हाँ	नही			
माणा	8	2	10	1,50,000	80
लाथा	6	4	10	1,00,000	60
नीति	6	4	10	1,50,000	60
पाण्डुकेश्वर	5	05	10	75,000	50

कीड़ाजड़ी से सबसे अधिक आय नीति व माणा के लोंगो की प्रति परिवार आय एक सीजन में रू 1,50,000 तथा लाता गांव की की आय रू 1,00,000 प्रति परिवार तथा पाण्डुकेश्वर रू 75,000 प्रति परिवार है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला की अधिक ऊंचाई वाले गांव में कीड़ा जड़ी से अधिक आय हो रही है। निचले गांव की अपेक्षा इसका कारण एक तो बुग्याल की नजदीकी तथा दूसरा कीड़ाजड़ी के व्यवसाय में परिवारों के अधिक सदस्यों की संलग्नता है।

तुलसी

तुलसी की माला का निर्माण जंगल से तुलसी लाकर उसकी माला बनाई जाती है। और उन मालाओं को बद्रीनाथ में बेचा जाता है तुलसी को पवित्र माना जाता है। इसकी पवित्रता के लिए इस माला को भगवान बद्रीविशाल को भेंट की जाती है। प्रति माला की कीमत 20 से 25 रू0 होती है तथा लगभग प्रत्येक व्यक्ति जो भगवान बद्रीविशाल के दर्शन करने जाता है वह तुलसी की माला भगवान के लिए भेंट करता है। माणा घाटी के अधिकतर लोग यात्रा सीजन के समय इस कार्य से अपनी आजीविका चलाते है। ।

सारणी 5: तुलसी की माला व्यवसाय में संलग्न लोग

गांव का नाम	सदस्यों की संख्या		कुल योग	प्रति परिवार आय	प्रतिशत
	हाँ	नही			
माणा	8	2	10	15000	80
लाथा	2	8	10	1000	20
नीति	1	9	10	500	10
पाण्डुकेश्वर	8	2	10	15000	80

उपरोक्त सारणी के अनुसार स्पष्ट है कि पाण्डुकेश्वर तथा माणा गांव के 10 में से 8 परिवार तुलसी की माला बेचने के व्यापार में सलग्न हैं। तथा इन गांवो की प्रतिवर्ष प्रति परिवार आय रू 15000 तक हो जाती है। जबकि सबसे कम नीति गाव की आय प्रतिवर्ष रू 500 प्रति परिवार तक हो जाती है।

आलू

आलू भोटिया जनजातियों की प्रमुख नगदी फसल है। आलू का वे लोग वर्ष भर सब्जियों के रूप में उपयोग करते है और बेच कर आय भी प्राप्त करते है। आलू नगदी फसलों में से एक फसल है। आलू के खेत में मिश्रित फसल बोते है। जब आलू के पेड़ गल जाते है। तो राजमा फाबर आदि फसल आलू के साथ ही एक खेत में उगाते है तथा तीनों ही फसले नगदी फसल है।

सारणी 6: आलू का उत्पादन

गांव का नाम	कुल उत्पादन	अपना उपयोग	विक्रय आयु मूल्य
नीति	20 कुन्तल प्रति परिवार	2 कुन्तल	17,000
माणा	15 कुन्तल	2 कुन्तल	12,000
लाता गांव	17 कुन्तल	2 कुन्तल	13,000
पाण्डुकेश्वर	8 कुन्तल	1 कुन्तल	6,000

सबसे ज्यादा आलू का उत्पादन नीति गांव में 20 कुन्तल प्रति परिवार होता है। लाथा तथा माणा में 17 व 15 कुन्तल प्रति परिवार होता है। सबसे कम पाण्डुकेश्वर में 08 कुन्तल प्रति परिवार होता है।

चौलाई

अधिक ऊंचाई पर होंने वाली फसलों में प्रमुख फसल रामदाना (चौलाई) है। यह एक परम्परागत व नगदी फसल है इस फसल की बाजार में बहुत अधिक मांग है इस का प्रयोग गांव के लोग रोटी बनाने के लिए करते है। इसकी रोटी मोटी व पौष्टिक व गर्म प्रदान करने वाली होती है तथा इसके दाने बारीक होते है इसको गर्म कर खाते भी है। देवताओं को प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है। इसे फलाहारों के रूप में माना जाता है तथा विशेष कर भगवान शिव के व्रत के समय इसे प्रसाद के रूप में प्रयोग करते है।

सारणी 7: चौलाई का उत्पादन

गांव	उत्पादन	आय
नीति	4 कुन्तल	12,000
माणा	2 कुन्तल	6,000
लाथा	3 कुन्तल	9,000
पाण्डुकेश्वर	1 कुन्तल	3,000

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सबसे ज्यादा रामदाना का उत्पादन नीति गांव में होता है। 4 कुन्तल प्रति परिवार लाथा में 3 कुन्तल प्रति परिवार माणा में 2 कुन्तल प्रति परिवार सबसे कम पाण्डुकेश्वर में 1 कुन्तल प्रति परिवार होता है।

राजमा

भोटिया जनजातियों की प्रमुख नगदी फसल है राजमा का उपयोग दाल के रूप में किया जाता है। यह अधिक कीमती होती है। भोटिया जनजाति ठण्डे क्षेत्रों में निवास करते है। यहा की राजमा अत्यधिक स्वादिष्ट व कीमती होती है।

सारणी 8: राजमा का उत्पादन

गांव का नाम	उत्पादन प्रति परिवार	आय
नीति	1 कुन्तल	10,000
माणा	1 कुन्तल	10,000
लाथा	1.50 कुन्तल	15,000
पाण्डुकेश्वर	50 किलों	5,000

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सबसे अधिक राजमा का उत्पादन लाता में प्रति परिवार 1.5 कुन्तल व नीति व माणा में प्रति परिवार 1 कुन्तल तथा सबसे कम पाण्डुकेश्वर में 50 किलो प्रति परिवारं उत्पादन होता है।

सेब अखरोट, खुमानी

भोटिया जनजाति का निवास स्थान अधिक ऊंचाई पर होंने के कारण यहां फलों में प्रमुख सेब, अखरोट, खुमानी आदि फलों का प्रचूर मात्रा में उत्पादन होता है। यहां का सबसे लोक प्रिय फल सेब है तथा सेब को बेचकर ये लोग अपनी आजीविका चलाते है। खुमानी एवं अखरोट को भी ये लोग विक्रय करते है। खुमानी के अन्दर की हड्डी बदाम की तरह होती है। उसके हड्डी को फोड़ कर जो निकलता है उसे पहाड़ी बदाम कहते है। इनसे तेल भी निकला जाता है। जो चूली के तेल के नाम से जाना जाता है।

सारणी 9: सेब का उत्पादन

गांव	उत्पादन	आय के रूप में
नीति	50 किलो	25,000
माणा	20 किलो	12,000
लाथा	40 किलो	20,000
पाण्डुकेश्वर	5 किलों	500

उपरोक्तसारणी से स्पष्ट है कि सेब का सबसे अधिक उत्पादन नीति गांव में 50 किलो होता है औरप्रति वर्ष प्रतिपरिवार आयरू 25,000 सबसे कम पाण्डुकेश्वर की प्रति परिवार प्रति वर्ष उत्पादन 5 किलो होता है।

सुझाव

1–तुलसी माला रोजगार का मुख्य साधन है इसलिए तुलसी के पौधे की नर्सरी तैयार की जानी चाहिए।

2–महिलाओं को सिलाई बुनाई का प्रशिक्षण व आधुनिक मशीन का वितरण किया जाना चाहिए।

3–युवा वर्ग को गाइड फोटोग्राफी का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

4–फरण की खेती को माणा गांव मे व्यापक स्तर पर बढावा दिया जाना चाहिए तथा फरण की मार्केटिंग की जाए यह प्याज और जीरा के प्रतिस्थापन के काम में आता है।

5–फरण की खेती के लिये माणा गांव में ही एक नर्सरी का निर्माण किया जाना चाहिए।

6–फरण की बिक्री के लिए बाजार उपलब्ध किया जाना चाहिए।

7–औषधिय पौंधों का उत्पादन किया जाए तथा नर्सरी विकसित की जाए।

8–फूलों की खेती का व्यापक स्तर उत्पादन किया जाए क्योंकि यहां पर फूलों की हर समय अधिक मांग रहती है।

9–खेतों के चारों तरफ कंटीले तारों से घेरबाड की जाए ताकि जंगली जानवरों से खेती की सुरक्षा हो सके।

10–सेब से सम्बधित वस्तुएं जैम जेली बनाने का प्रशिक्षण, मशीन एवं सामुहिक केन्द्र गांव में स्थापित किया जाए।

11–जैम जैली विक्रय हेतु बाजार उपलब्ध किया जाए।

12–सब्जियों के उत्पादन हेतु पालीहाउस का निर्माण।

13–सेब के उच्च प्रजाति के पेडों का वितरण किया जाए।

14–उन्नत किस्म की सेब की खेती के लिए एक्सपोजर विजिट कराये जाए।

15–भेड पालन को बढावा दिया जाए।

16–बुरांश के फूलों से जूस बनाने का प्रशिक्षण दिया जाए।

17–मॉसी से धूप बनाने का प्रशिक्षण देना एवं केन्द्र की स्थापना।

18–पशुपालन एवं दुग्ध पालन को बढावा दिया जाए।

19–मूर्गी पालन को बढावा दिया जाए।

20–स्थानीय युवकों को मंदिर समिति मे नियुक्ति प्रदान की जाए।

21–फलदार वृक्ष जैसे सेब आडु, खुमानी, अखरोट आदि उन्नत किस्म के वृक्षों का रोपण किया जाए।

22–कीड़ा जड़ी व झूला व्यवसाय के अनियन्त्रित दोहन को नियन्त्रित किया जाना आवश्यक है क्योकि हिमालय संवेदनशील पारिस्थितक तन्त्र है।

सन्दर्भ

रिसर्च पेपर पूर्णतः प्राथमिक आकडो एवं स्वरचित लेखन पर आधारित है।